③ प्रभावक (Effector):-

व्यवहार की उत्पत्ति का आकार करने वाला संस्थान प्रभावक कहलाता है। ग्राहक किसी स्नायु प्रवाह को उच्च मस्तिष्क में मात्र पहुँचा देता है। जिससे परिणाम स्वरूप किसी उद्दीपन के संबंध में ज्ञान (knowledge) हो जाता है, किन्तु प्राणी उसके प्रति कोई व्यवहार करने की स्थिति में नहीं होता है। इस कार्य को प्रभावक ही सम्पन्न करता है। यह ग्राहक द्वारा उच्च मस्तिष्क में पहुँचाए गए स्नायु प्रवाह को लेकर कार्य स्थल तक पहुँचा देता है। अतः प्रभावक के अभाव में किसी उद्दीपन के प्रति चेतना रखते हुए भी प्राणी कोई क्रिया या व्यवहार करने में सक्षम नहीं हो सकता है। इस महत्वपूर्ण पक्ष का आधार प्रभावक है।

प्रभावक के दो प्रकार हैं जिन्हें माँस पेशियाँ तथा ग्रंथियाँ (Glands) कहते हैं। माँसपेशियाँ वास्तव में माँस के लोथड़े हैं जो हमारे सम्पूर्ण शरीर में फैले हुए हैं। इनके दो प्रकार होते हैं जिन्हें ऐच्छिक माँसपेशियाँ (voluntary muscles) तथा अनैच्छिक माँसपेशियाँ कहते हैं। जैसे:- हमारे हाथ पैर की माँसपेशियाँ ऐच्छिक हैं जो हमारी इच्छा के अनुकूल कार्य करती हैं। दूसरी हमारे शरीर के भीतर रक्त संचार, हृदय कार्य आदि जो स्वतः क्रियाशील रहती हैं। किसी ग्राहक से प्राप्त सूचना के अनुकूल जिनके माँसपेशियाँ सक्रिय हो जाती हैं जिससे व्यवहार उत्पन्न होता है। तात्पर्य स्वरूप कोई व्यवहार

ग्रंथियाँ कहते हैं। इनके दो प्रकार हैं। इन्हें नलिका ग्रंथि (Duct gland) तथा नलिकाविहीन (Ductless gland) हैं। इन दोनों तरह के ग्रंथियों को क्रमशः exocrine तथा Endocrine gland कहते हैं। नलिका ग्रंथि के अन्तर्गत लार की ग्रंथि तथा पसीने की ग्रंथि की गणना की जाती है। दूसरी और नलिकाविहीन ग्रंथि में कंठ ग्रंथि (Thyroide gland) पियूष ग्रंथि (Pituitary gland) एड्रिनल ग्रंथि (Adrenal gland) यौन ग्रंथि (Sex gland) आदि की गणना की जाती है। ये सभी ग्रंथियाँ प्रभावक के रूप में कार्य करती हैं और व्यवहार की उत्पत्ति में सहायक होती हैं। ये सभी ग्रंथियाँ वास्तव में कोषों (cells) के समूह के रूप में होती हैं और शरीर के विकास एवं कार्य के लिए रासायनिक यौगिक (chemical compounds) का निर्माण करते हैं। यह कोष समूह शरीर के आंतरिक वातावरण को स्थिर बनाए रखता है और समस्त स्थिति को बनाए रखता है। यह प्राणी को अत्यधिक ताप, शीत आदि से बचाता है। इन ग्रंथियों का प्रभाव व्यक्ति के संवेगों तथा चिंतन पर भी पड़ता है।

व्यक्ति के व्यवहार को उत्पन्न करने में ग्रंथियाँ भिन्न भिन्न रूप में सक्रिय रहती हैं। जब आँख (ग्राहक) किसी साँप को देखकर उत्तेजित होता है तो स्नायु प्रवाह मस्तिष्क के प्रष्ठ खंड में पहुँचता है और साहचर्यों के आधार पर उसे साँप का प्रत्यक्षीकरण होता है। यह स्नायु प्रवाह

गतिवाही स्नायु (motor nerve) के द्वारा पेशी और माँस पेशियों effector में पहुँचता है, तो व्यक्ति में भावों का व्यवहार उत्पन्न होता है। इस तरह भिन्न भिन्न ग्रंथियों से भिन्न भिन्न व्यवहारों का विकास होता है। जैसे एड्रिनल ग्रंथि के अधिक सक्रिय हो जाने पर व्यक्ति में अधिक सक्रियता देखी जाती है। व्यक्ति में चिड़चिड़ापन, बेचैनी, उग्रता आदि व्यवहार देखे जाते हैं। कंठ ग्रंथि के अधिक सक्रिय होने पर व्यक्ति की बुद्धि का विकास तेज हो जाता है। और ग्रंथि के निष्क्रिय हो जाने पर व्यक्ति मानसिक दुर्बलता का शिकार बन जाता है। यौन संधियों का निश्चित प्रभाव द्वितीयक यौन विशेषताओं पर पड़ता है। पियूष ग्रंथि का निश्चित प्रभाव शारीरिक तथा क्रियात्मक व्यवहारों पर पड़ता है। इसी तरह अन्य सभी ग्रंथियों का प्रभाव भिन्न भिन्न रूप में व्यक्ति के व्यवहार पर पड़ता है।

③. समायोजक (Adjuster) :→

व्यवहार के तीसरे जैविक संरचना को समायोजक कहते हैं। समायोजक वास्तव में स्नायुतंत्र की इकाई है। उसे स्नायुकोश कहते हैं। यही स्नायुकोष ग्राहक तथा प्रभावक के बीच संबंध स्थापित नहीं होता है जिससे किसी तरह के व्यवहार या क्रिया की उत्पत्ति संभव नहीं होता है। इसी आधार पर स्नायुकोश को समायोजक कहा जाता है।

स्नायुकोशों के मुख्य तीन भाग हैं जिन्हें कोशिका शरीर, मुख्य तंतु तथा शिखातंतु कहा जाता है। कोशिका शरीर वह भाग है जो स्नायु प्रवाह को ग्रहण करता है। शिखातंतु स्नायुकोश का वह भाग है जो स्नायुप्रवाह को ग्रहण करने में सहायक होता है। मुख्य तंतु उस भाग को कहते हैं जो शिखा तंतु के लाए गए स्नायु प्रवाह को बाहर निकाल देता है। इस तरह इन तीनों भागों की सहायता से ग्राहकों द्वारा लाए गए स्नायुप्रवाह को प्रभावक को पहुँचा देते हैं और तब व्यक्ति क्रिया विशेष को सम्पन्न करने में सक्षम होता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि व्यवहार के उपर्युक्त तीन जैविक संरचना हैं जिन्हें क्रमश ग्राहक, प्रभावक तथा समायोजक कहते हैं। इन तीनों का क्रमिक स्थिति इस प्रकार है ग्राहक, समायोजक तथा प्रभावक दूसरे शब्दों में ग्राहक किसी उद्दीपन से प्रभावित होता है जिससे उत्पन्न स्नायुप्रवाह मस्तिष्क के संवेदी खंड में जाता है। फिर उस स्नायुप्रवाह को स्नायुकोश एक विशेष तरीके से प्रभावक तक पहुँचा देता है जिससे व्यक्ति किसी व्यवहार को करने में सक्षम होता है।